SHORT SUMMARY OF THE WORK DONE ON THE UGC MINOR RESEARCH PROJECT

Title of the Research Project	**:**	**Prabha Khaitan Aur Mannu Bhandari Ka Antardwand – Atmakathao Ke Sandarbh Me**
Name and Address of Principal Investigator	**:**	**Ms. Nandini Joshi** **Assistant Professor (Hindi),** **Department of Foundation Courses** **Christian Eminent Academy of Management, Professional Education & Research,** **F-Sector, HIG, R.S.S. Nagar Main Road, Indore**
UGC approval Letter No. and Date	**:**	**MH-4/103039/XII/13-14/CRO Dated 2014**

Summary of the Findings

इक्कीसवीं सदी संचार क्रांति की तेज बयार जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, जिसने व्यक्ति को सोचने एवं गढ़ने के लिए नई जमीन दी तथा बहुआयामी परिवेश का सृजन किया । इस सृजन ने साहित्य में भी नए–नए प्रयोग एवं विधाओं को नूतन आयाम दिया । इसमें से एक आयाम आत्मकथा के लिए भी प्रशस्त हुआ । साहित्य में आत्मकथाओं की लाइन–सी लग गई । अपने आपको सम्पूर्णता में व्यक्त कर देने की ललक ने स्त्री की लेखनी को भी इस दिशा में प्रवृत्त किया और ''स्त्री आत्मकथाएँ'' इस सदी में चर्चा का विषय बन बैठी । अपने जीवन की रहस्यात्मक गोपनीयता को पाठक मनोयोग से पढ़े, इसी मानसिकता ने आत्मकथाओं के लेखन को फैशन की बतौन चला दिया । स्त्री द्वारा आत्मकथा लिखने की शुरूआत जानकीदेवी बजाज द्वारा 'मेरी जीवन यात्रा' से मानी गई है । आत्मकथा लेखन के प्रारंभिक दौर में जब स्त्री द्वारा आत्मकथाएँ लिखी गई। तब आत्मकथा के रूप में वह अपने छोटे–से घर–संसार को ही व्यक्त कर पायी। आत्मकथा के विकास क्रम में धीरे–धीरे स्त्रियों ने घर की दहलीज़ के बाहर कदम रखकर लिखना शुरू किया। कुछ स्त्री आत्मकथाकारों ने स्वयं का भोगा हुआ सत्य व्यक्त करते हुए अपने लेखन में अत्यधिक पारदर्शिता का प्रयोग किया। आज की स्त्री आत्मकथाकार समाज को सच का आईना दिखाने की क्षमता रखती है। वह अब वैसी स्त्री नहीं रही जिसे या तो सिर्फ भोग्या या दुनिया के समक्ष पूज्या ही माना जाता था। पुरूष प्रधान समाज में जब महिलाओं द्वारा आत्मकथा जैसी गंभीर विधा पर लेखनी चलाई गई, तब उनके लेखन को बोल्ड लेखन की संज्ञा दी गई। अपने जीवन की व्यथा को व्यक्त करने के लिए स्त्री आत्मकथाकारों ने जीवन की यथार्थ अनुभूतियों को,संवेदना के धरातल पर रखकर आत्मकथाएँ लिखी है। स्त्री आत्मकथाकार अपनी घुटन,पीड़ा और संत्रास के दौर से गुजरते हुए, अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती रही। एक ओर जहाँ वह अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु संघर्षरत है तो दूसरी ओर वह समाज की कुरीतियों का खुलकर विरोध करती है। हमारे पुरूष प्रधान समाज में लेखिकाओं की आत्मकथा, लेखकों की आत्मकथा की अपेक्षा अधिक चौकाती है, इन्हें पढ़ने वाले कुछ क्षण सोचने को मजबूर हो जाते है कि 'क्या ऐसा भी हो सकता हैं ?'

स्त्री आत्मकथा लेखन एक बड़े परिवर्तन से गुजरा है। स्त्री आत्मकथाकारों द्वारा पारिवारिक,सामाजिक वैचारिकता की प्रक्रिया में अपेक्षित परिवर्तन किये है। युगीन आवश्यकतानुरूप पूर्व विस्थापित जीवनमूल्यों का पुर्नमूल्यांकन कर उन्हें नवनिर्माण की ओर अग्रसर किया है। इनमें परिवार–समाज एक नई दिशा पाता है तथा स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागृत व सतर्क होकर, विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए अग्रसर है।

आधुनिक काल में स्त्री आत्मकथाकारों ने पूर्व आत्मकथाकारों की लीक से हटकर अपने सामाजिक, राजनीतिक जीवन को भी लेखन का माध्यम बनाया। इस काल तक आते–आते आत्मकथा लेखन का स्वरूप ही बदला हुआ दिखाई देने लगा। जिसे बोल्ड लेखन नाम दिया गया। अगर किसी कुंवारी स्त्री के संबंध किसी शादीशुदा पुरूष से हैं, तो उसने अपनी आत्मकथा में व्यक्त किया है। किसी विवाहित स्त्री के संबंध अन्य पुरूषों से हैं, तो भी आत्मकथाकार ने बिना किसी दुराव–छुपाव के अपनी बात को खुलकर आत्मकथा में व्यक्त किया है।

आज जो स्त्री आत्मकथाएँ आ रही हैं, वह सिर्फ 'स्त्री' का अपना सच नहीं है, वरन् वे समाज का वह आईना है। जिसमें आधुनिक होने की जिद के साथ उसमें 'समरस' होने की कल्पना है। आत्मकथा यात्रा के शुरूआती कदम भले ही कंपित रहे हो, किन्तु अब उनमें स्थिरता आ गई है। बिना किसी कुंठा और हिचकिचाहट के इन आत्मकथाओं ने युग में अपने होने को सिद्ध किया है।

इस शोध कार्य में प्रभा खेतान एवं मन्नू भंडारी की आत्मकथाओं का कुछ कथ्य लेकर उसमें स्त्री जीवन के अर्न्तद्वन्दों और स्त्री के यथार्थ को परखने का प्रयास किया गया हैं।